NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2009

HINDI HOME LANGUAGE: PAPER II
MARKING GUIDELINES

Time: 2½ hours 80 marks

These marking guidelines were used as the basis for the official IEB marking session. They were prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom were required to attend a rigorous standardisation meeting to ensure that the guidelines were consistently and fairly interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

At standardisation meetings, decisions are taken regarding the allocation of marks in the interests of fairness to all candidates in the context of an entirely summative assessment.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines, and different interpretations of the application thereof. Hence, the specific mark allocations have been omitted.

Please note that learners who provided alternate correct responses to those given in the marking guidelines will have been given full credit.

IEB Copyright © 2009

प्रश्न एक

निम्नलिखित चार कविताओं में से किन्हीं <u>दो</u> के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए।

कविता

१.१. मेरा मिटने का अधिकार

१.१.१. कविता का शीषर्क का अर्थ क्या है। ? २

१.१.२. संदर्भ सहित व्याख्य कीजिए : "*वे मुस्काते फूल नहीं जिनको आता है मुरझाना*" । ४

१.१.३. *मिटने का अधिकार* किन शब्दों से वर्णन किया गया है ? ४

(१०)

अथवा

१.२.माता

१.२.१.*माता* कविता में क्या सन्देश है ? ३

१.२.२.कविता " माता" में कवि ने क्या भाव व्यकत किए हैं ? ३

१.२.३.सन्दर्भ व्याख्या कीजिए ः

१.२.३.१. *अरे मुझको कहते है माता ।*
क्या जानेगा मेरे जी को । २

१.२.३.२. *मैं हूँ विश्व बनानेवाली ।* २

(१०)

अथवा

१.३. *देख उत्ताल तरंगों की कार्य रत कब घबराता है ॥*

दिए गए पंक्तियों को पढ़ कर *कर्मवीर* अपने शब्दों में वर्णन कीजिए । (१०)

अथवा

१.४. चार विचार न जीवन है रोने का ठौर

न जीवन खुश होने का ठौर

चार विचार कविता को अपने शब्दों मे हिन्दी में समझाइए । (१०)

{२०}

प्रश्न दो

२ . निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसपर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

<u>मौसम लेते हैं करवट</u>

एक फूल जब झर जाता है,
फूल दूसरा खिल आता है,
ऐसे ही बस उपवन अपना ,
नित ही हरा भरा रहता है ।
शाम हुए सूरज छिपता हैं,
चॉंद गगन पर आ दिपता है ,
हाथ रोशनी का पकड़े नित,
भू मंडल घूमा करता है ।
धरती बहुत गरम जब होती ,
बदली आ पानी से धोती ,
वह भी कहीं चली जाती तब ,
शीतलता के बिखरे मोती ।

एक खेल से जब हटता है,
तभी दूसरा आ डटता है,
जब वह भी हट जाता है,
रंग तीसरा का चढ़ता है ।

उपवन अपने महका करते,
सूरज चाँद चमकते रहते,
मौसम भी लेते हैं करवट,
ऐसे खेल सदा ही चलते ।

२.१. कविता का भावार्थ लिखिए ? ३
जीवन का रीति
२.२. *उपवन* का क्या अर्थ है ? २ जहाँ फूलों और पौधे होते है ।
२.३. ऐसे खेल सदा ही चलते , अपने शब्दों में समझाइए । ३ पूराने चले जाते है और नए आते है
२.४. अवतरण में से समानार्थी शब्द लिखिए ः

२.४.१. सुमन फूल २.१.२. सूर्य सूरज २

(१०)

{३०}

प्रश्न तीन

३.उपन्यास – दुर्गा का मंदिर ः निम्नलिखित दो वर्ग में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।
३.१.१.ब्रजनाथ ने क्यों नाराज़ होकर भामा से क्या कहा ? २
३.१.२. कौन सा महीना था ? २
३.१.३.भामा ने संदूक में रखी गई गिबियाँ के बारे में क्या कहा ? २
३.१.४.पार्क में बाबू ब्रजनाथ को घास पर क्या दिखाई और उस में क्या था ? ४
३.१.५. जब मुँशी गोरेलाल ने तीन रूपये माँगे तो ब्रजनाथ ने क्या किया ? ५
३.१.६. नवरात्रि के आंतिम दिन दुगा मंदिर में क्या हुआ संक्षेप में समझाईए ? १०

IEB Copyright © 2009

(२५)

अथवा

३ . २ *"बाबू ब्रजनाथ क़ानून पढ़ने में मग्न थे और उनके दोनों "बच्चे लड़ाई करने में ।*
दुर्गा का मंदिर कहानी का व्याख्य अपने शब्दो में कीजिए । २५ **{२५}**

प्रश्न चार

४ . निम्नलिखित दो वर्ग में से किन्हीं **<u>एक</u>** के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

४ . १ . कहानी - शान्ति ः *"जब मैं ससुराल आयी तो बिलकुल फूहड़ थी । न पहनने ओढ़ने का सलीका न बातचीत करने का ढंग"* २५

अथवा

४ . २ . कहानी – शान्ति

४ . २ . १ . वकील बाबू और उनकी पत्नी के बीच क्या अंतर था ? २
४ . २ . २ . रामायण के बारे मे बाबूजी का क्या विचार था ? ४
४ . २ . ३ . लेखिन का व्यवहार अपने सास ससुर के प्रति कैसा था ? २
४ . २ . ४ . दालमोट न बनने पर सास नाराज़ होकर क्या बोली? ५
४ . २ . ५ . इलाहाबाद चले जाने के बाद लेखिका के जीवन में कैसा परिवर्तन हुआ ? ५
४ . २ . ६ . बाबूजी ने शान्ति कैसे प्राप्त की ।

{२५}

[८०]

विशारद काव्य - कुंज - 3 Poem Number 13

कविता - चार विचार (page 111)

कवि - हरिवंशराय बच्चन

Words

ठौर – place, अनुरक्त – attached, विरक्त – detached, गौर – reflect,
धुन - धंधों – worldly affairs, अचरज – with wonder, दृग – eyes,
एकटक – without blinking the eyes, चक्की – grinding mill, विराट – huge,
पाट – grinding mill stone, दीर्घाकार – gigantic shop, अवनि – the earth,
विस्तार – expanse, खेद – regret, यंत्र – machine, पिसता – grounded, trampled,
लघु – small, मधुता – sweetness, पर्याप्त – sufficient, कटुता – bitterness,
अनुराग – fondness, व्याप्त – existence, to pervade, रस – enjoyment or happiness,
अंतरतम – the core of one's heart, दरकार – necessity, need, आसरा – expectation,
सहारा – support, help, वरदान – gift or born from God,
अंतस्तल – within the heart or mind, राग – attachment, emotion,
पाताल – the nethermost world as referred to in the Panamas within the bowels of the earth,
अंधकार को भेद – to penetrate the realm of darkness,
साधो अपनी चाल – to mould your path in life

Verse 1

कवि कहता है कि यह जीवन न रोने के लिए है न हँसने के लिए इस जीवन में न किसी चीज से अधिक घुलमिल जाना चाहिए अथवा बिलकुल दूर चला जाना चाहिए। यह हम तभी जान सकेंगे यदि हम इन बातों पर गौर पूर्वक विचार करेंगे।

Verse 2

कवि कहता है कि कभी कभी उसके मन में यह बात उठती है कि दुनिया के सब धंधों को वह छोड़कर उससे अलग हो जावे। और दुनिया की सब चीजों को छोड़कर, वह दुनिया को आँखें खोलकर एकटक देखना चाहता है।

IEB Copyright © 2009

Verse 3

यह दुनिया एक बहुत ही बड़ी चक्की के समान है। जिसके दो गोल पत्थर भी बहुत बड़े हैं। इस दुनिया का ऊपरी भाग आकाश है और निचला भाग धरती है।

Verse 4

कवि कहता है कि उसे इस बात का दुख नहीं है कि उसने इस दुनिया में जन्म लिया है यद्यपि उसे इस दुनिया में बहुत परेशानी उठानी पड़ी है। यह दुनिया एक यन्त्र के समान है जो घिसता (wears) रहता है, पर इस बड़ी दुनिया में मनुष्य एक छोटा इन्सान रहता है। है जो हमेशा पिसता

Verse 5

कवि कहता है कि यदि उसके साथ कोई प्रेम से व्यवहार करे तो वह भी उसे पसंद नहीं है। यदि कोई कटुता (bitterness) से भी व्यवहार करे तो उसे वह भी पसंद नहीं है। उसे किसी ऐसे व्यवहार से भी प्रेम नहीं है जिसमें मधुता और कटुता भी शामिल (व्याप्त) न हो।

Verse 6

कवि कहता है कि दुनिया के रहस्य को वह अपने हृदय के अन्दर नहीं खोज रहा है। परन्तु उसको मालूम है कि जिस रस (enjoyment) को वह खोज रहा है, वह शरीर के बाहर जो दुनिया है

उसमें भी उसे वह सुख और आनन्द नहीं मिल सकता।

Verse 7

कवि मनुष्य से कहता है कि अपनी दुखों को दूर करने के लिए ईश्वर पर भरोसा मत कर। और इस धरती पर भी किसी पर भी आसरा मत कर। क्योंकि कोई भी सहायता देने नहीं आएगा। क्या तुमको यह नहीं मालूम है कि ईश्वर ने तुम्हें ऐसा वरदान दिया है कि तेरे हृदय में वह राग है जो तुम्हारी दुखों को कम कर सकता है।

Verse 8

अपनी भावनाओं से आकाश को वश में कर ले, उसी तरह पाताल को भी वश में कर ले। जीवन के सामने जो अंधकार है उसको बुद्धिमानी से पार कर और अपने जीवन को सीधे रास्ते पर ले चल।

IEB Copyright © 2009

विशारद   काव्य - कुंज - 3   कविता 5

कविता - माता   कवि - माखनलाल चतुर्वेदी - पृष्ठ 73-74

Lines 1 – 8

जी – heart, mind दिल, विधाता - ब्रह्मा – creator, स्वरूप – form,
प्रेम-योगिनी – Lover of God, जी के टुकड़े – children,
बरबस - विवश – to be forced to do something, helpless, compelled,
वारा – to make an offering, झूम झूम - नाचते, मम लाला – my child,
यशोदा-सुत – Shri Krishna, अपना प्रसव कसाला – child who I gave birth to,
सँवारा - सजाया, यौवन – youth, कुरबानी - त्याग – sacrifice,
सुत - बेटा, लासानी - अनुपम – wonderful

माता दुखी है। वह विधाता से पूछती है - तू मेरे दिल के बारे में क्या जानेगा। मैंने भगवान की मूर्ति को बड़े प्रेम से सजाया, उसी भगवान को मैंने लाचार होकर सौंप दिया। दोनों नाचते हुए आए। कृष्ण और मेरा लाल। माँ कहती है मैं पहले अपने बच्चे को गोद में लूंगी जिसे मैंने जन्म दिया है। वह अपने पुत्र से कहती है कि सारी जिन्दगी उसने सुख का त्याग किया, गरीबी सही और अपने यौवन जीवन में (during her youth) त्याग ही त्याग किया है। उसके बच्चों के नसों में उसका खून बूंद-बूंद बह रहा है।

Lines 9 – 16

पुनर्जन्म – rebirth, ढकेलना - धक्का देना – push,
जीवन प्रभात - जीवन का सबेरा, शिखर – top, neck,
किलकियाँ – joyous sounds, श्री गणेश – early childhood,
दुहराहट – repetition, तेजस्विनी प्राण-पूरित – full of life,
विधि – fate, तसवीर – picture, portrait

माँ को बचपने के दिन याद आ रहे हैं। उसका बेटा हँसकर उसे ढकेल रहा है। वह उन दिनों की याद कर रही है जब

वह जवान थी और उसका बच्चा उसके साथ-साथ बढ़ रहा था। जिन सीढ़ियों पर दोनों उतरते थे, वह अब हँसते हुए ऊपर फिर से चढ़ रहा है। उसे अपने जवानी के दिन बहुत प्यारे लगते हैं। जब पिछले दिनों की याद आती है तो जवानी के चेहरे उसे याद आते हैं

Lines 17 – 24

बुढ़ापा – old age, सम्मुख - सामने – in front of, चुम्बन – kiss,
रूठा भूत – the past is displeased, भविष्य लाल बना – future is like a child,
संचित बढ़ी उमर – accumulation of years, i.e. ageing, कुचलना – to crush,
नन्ही उमर – young in years, पनप - पनप इठलाये – growing affectionately,
आत्म समर्पण – to sacrifice oneself, अपनी प्रतिमा – one's image,
हृदयवान – kind-hearted

उसका बचपन अब बुढ़ापा की ओर बढ़ रहा है। उसका बुढ़ापा इसके सामने खेल रहा है। उसे इस बात पर विश्वास नहीं है कि बीता समय लौटकर नहीं आता है। इसके बीते हुए दिन ~~अगर~~ अब भविष्य में बच्चा बनकर गोद खेलने आया है। माँ कहती है कि बुढ़ापे में व्यक्ति एक बच्चा जैसे हो जाता है जिसे दूसरे लोग देखभाल करता है। अपने बुढ़ापे के समय वह जवानी के दिन याद करती है जब वह प्यार से पलती और बढ़ रही थी। वह जानना चाहती है कि कोई ऐसा दयावान व्यक्ति है जो यह पूछे कि वह अपने जीवन को दूसरों पर क्यों लुटा देती है।

IEB Copyright © 2009

Lines 25 – 32

जगज्जननि – Creator – Mother of the world, मधु-मादक – Scented with honey
मनमोहन, मुरलीधर, गिरिधर – All names of Lord Krishna, जग – The World

माँ यहाँ अनेक रूपों से पुकारी गई है। विश्व को बनाने-वाली, विश्व को जिलानेवाली (giver of life), विश्व को चलानेवाली (controller of the Universe), जग की माँ, जग को जन्म देनेवाली उसकी बीती हुई गाथा मधु के समान होश उड़ा देनेवाली पुण्य और पवित्र है। श्रीकृष्ण उसके मन को मोहनेवाले, मुरली बजानेवाले, पर्वत को उठानेवाले, उसके घर की ज्योति और मुरली के गीत से सबको नचानेवाले नटवर हैं

Lines 33 – 40

परम ज्योति - परमात्मा, भार-वाहक - भार उठानेवाली,
गाहक - प्राण लेनेवाली, अकुलानी – confused, weary,
कुरबानी की तान – song of sacrifice, जोगन - योगिनी – ascetic,
महाप्रलय – total destruction of the world,

माता कहती है वह परमात्मा के दिए हुए दुखों को अपने सिर पर बोझ उठानेवाली है। वह लोगों के प्राण को लेनेवाली एक गाहकनी है। चाहे मेरा नाम हो या मैं बदनाम हो जाऊँ, यह मुझ व्याकुल स्त्री की कुरबानी का गाना है। मैं कोई योगिनी जो तपस्या करने बैठी हूँ। केवल भगवान ही जानता है कि मैं अपने पुत्र से कितना प्रेम करती हूँ। वह भगवान से प्रार्थना करती है कि किसी पर मुसीबत का पहाड़ नहीं टूट पड़े चाहे इस जग का नाश हो जावे, किसी का लाल (son) उसकी माँ से बिछड़ नहीं जावे।

अभ्यास कार्य

इस कविता में कवि ने भारतमाता, जगतजननी दुर्गा माँ तथा एक साधारण माता के दुखों को और उनकी आत्मा की पुकार पर बहुत ही सुन्दर सजीव चित्र खींचा है। इस बात को ध्यान में रखते हुए एक निबन्ध लिखिए।

IEB Copyright © 2009

विशारद , काव्य कुंज - 3

कविता: मेरा मिटने का अधिकार
कवयित्री: महादेवी वर्मा

Words

मुस्काते – smiling, मुरझाना – to wither, भाता है – to love, to like, नीलम – sky,
मेघ – clouds, अनन्त – endless, ऋतुराज – season, सूने से – silent, सेज – a bed,
बेसुध पीड़ा – senseless pain, वेदना – pain, agony, अवसाद – sorrow,
अमरों – those who are immortal, करुणा – pity, उपहार – gift

Verse 1

कवयित्री कहती है जो फूल मुरझा जाते हैं, उसे मुस्काते फूल नहीं कह सकते। तारों में जो प्रकाश है वह दीप नहीं यदि वे बुझ जाते हैं।

Verse 2

आकाश में घिरे बादल, बादल नहीं यदि वे बरस कर घुल जाते हैं। ऋतु ऋतुराज नहीं, यदि ऋतुएँ आकर चले जाते हैं।

Verse 3

वे आँखें सूने नहीं यदि उनमें से निकले आँसू मोती बन जाते हैं। वह जीवन जीवन की सेज नहीं, यदि उसके भीतर मौत की पीड़ा मौजूद है।

Verse 4

जीवन में कभी ऐसा समय जब मनुष्य दुखी नहीं, जब वह जीवन में जलता नहीं। इस जीवन में दुख भी जल जाता है। जिसने जीवन में मिटना नहीं सीखा, उसका जीवन जीवन नहीं।

वह पूछती है, क्या भगवान उसे ऐसी भेंट जिसमें वह सदा अमर हो जायेगी। वह इतनी जीवन से परेशान हो गई है कि भगवन, मुझे अ छोड़ दीजिए, मुझे मर जाने का अधिकार है। वह दुख के कारण जीवन से तंग आ गई है।

IEB Copyright © 2009

विशारद - काव्य कुंज - ३ - कविता 2

कर्मवीर - पृष्ठ ६१ - अयोध्यासिंह उपाध्याय

Verse 1 (Lines 1 – 4)

कर्मवीर - जो अपने काम में उत्साह (with enthusiasm) से लग जाता
उत्ताल तरंगों - समुद्र में उठती हुई तूफानी लहरें (stormy waters)
कार्य-रत - काम में व्यस्त (one engaged in a task)
कुंभज सी - जल पात्र (vessel holding water) पयोनिधि - सागर ocean

अर्थ

कवि कहता है कि एक कर्मवीर जो अपने काम में लग जाता है वह मुसीबतों (difficulty) से नहीं घबराता है। यदि समुद्र में तूफान भी उठने लगे, वह अपने साहस से उस सागर का पानी पीजाने की शक्ति रखता है।

Verse 2 (Lines 5 – 8)

कार्य-पथ का बाधक - उसके काम में बाधे (obstacles on his path)
पौरूष - (manhood, masculinity) मर्दानगी, पवि - वज्र (lightning)
परिणत - बदलना (to change)

अर्थ

एक कर्मवीर रास्ते में बाधाएँ देखकर घबराता नहीं है। वह वीरता से आगे बढ़ता है। सामने यदि पर्वत जैसा बाधक भी आवे तो वह वज्र बनकर पर्वत को धूल में बदल देता

Verse 3 (Lines 9 – 12)

अड़ी - अड़चन - बाधाएँ जो हटाई नहीं जा सकतीं
सदृश - के समान
टलता - पीछे हटता है

अर्थ

उसके रास्ते में कितनी भी बाधाएँ आती हैं वह उनको उसी प्र

IEB Copyright © 2009

चकनाचूर करता है जैसे हम अपने पैरों के नीचे चीटियों को मसल देते हैं। एक वीर पुरुष जब किसी कठिन काम को अपने हाथों में लेता है, वह जबतक उसे खतम नहीं करता है वह पीछे नहीं हटता है।

Verse 4 (Lines 13 – 16)

विघ्न, बाधा – अड़चन (hindrances, obstacles), साहसी - वीर (courageous), साहस - वीरता (courage), आपदा - मुसीबतें (difficulties)

अर्थ

एक कर्मवीर के सामने विघ्न और बाधाएँ आगे नहीं आतीं। उसका साहस देखकर मुसीबतों को भी साँस लेने की हिम्मत नहीं होती।

Verse 5 (Lines 17 – 20)

यत्न -- कोशिश (attempt), रत्न - मणि (precious stones)

कीचड़ - गीली मिट्टी (mud), उकठे - सूखे हुए

अर्थ

कवि कहता है कि कोई भी काम आसानी से सफल नहीं होता। उसके लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। जिस प्रकार अनेक प्रकार के रत्न कीचड़ में पाये जाते हैं वह आसानी से नहीं मिलता। कई फल काँटों के बीच लगते हैं, और सुन्दर फूल धूल में खिलते हैं।

Verse 6 (Lines 21 – 24)

श में – काबू में (under control) विविध ढंगों - अनेक प्रकार के

ल कर – जला कर दामिनी – बिजली (lightning)

र्थ

वि कहता है कि कर्म मनुष्य के बुद्धि के वश में है, अनेक प्रकार के कर्म होते है। बिजली एक नी रूप में चमकती है

IEB Copyright © 2009